

29  $\frac{7}{19}$  पत्रबली पर इसी व्युत्पाद्य रूप  
 अहम व्युत्पाद्य सुनी गई। व्युत्पाद्य  
 प्राप्ति न रूपन अहम में बनाम  
 वि व्युत्पाद्य सुनी आराजी व्युत्पाद्य  
 प्राप्ति न स्वयंभूत के मध्य प्राप्ति

सहायक कलक  
 लखनऊ अ  
 गीपाह गहर

७५५

का कड़ाई अग्राई हो रहे हैं जिनका  
 F.I.R. अपाई पुपिष्ठ थान में दर्ज है  
 जिनका जुरिय वकील जयदेव का  
 न. III के साथ आमानुष में प्रसू की है  
 इसी अन्वय जकील सख्तानी ने वकील  
 जामी खोर काजाम के पत्रों का खिस्त  
 किया। हमने बहुत बफुनाय सुनी अथ  
 पा मनन किया। वरु गृह्य पाराना  
 का जका दोनों पक्षों में कार का  
 लड़ाई अग्राई हो रहे अमानुष-व्यवस्था  
 अंग हो चुकी है। इतनापि दोनों पक्षों  
 में अमानुष व्यवस्था बनाई रहे। दोनों पक्षों  
 का जुरिय सन्तोष विषे चला पाकर  
 किया जाना शक्ति अंग होला है  
 अथ दोनों पक्षों का पाकर किया  
 जाय है कि वह वाद के निहवार  
 एक राजा अंग जवातिय के  
 खतरा नम्बर 127 रकब 1.7879 हेक्  
 व खतरा नम्बर 127/311 रकब  
 1.359 हेक् भूमि की राजा  
 रेकर एव गाने की यथास्थिति  
 व्यायम रखी जाय। एवं दोनों पक्ष